प्रतिमान

शहर का रुझान

रीतिका स्याल

अनुवाद : अरुण कुमार त्रिपाठी

विभिन्न समूहों की मतदान-प्रवृत्ति भारत में एक समरूपी व्यवहार की देखी जाती रही है। राजनीतिक लेखन में किसी समूह की शिनाख़्त करने के लिए इस प्रवृत्ति का ज़िक्र अक्सर एक विशिष्ट लक्षण के तौर पर होता जाता रहा है। उदाहरण के लिए विभिन्न जातियों और धार्मिक समुदायों की राजनीतिक प्राथमिकताओं और मतदान-प्रवृत्तियों को उस समुदाय की ऐसी व्यवहारगत विशिष्टताओं के तौर पर देखा जाता रहा है जो उसे दूसरे समुदायों से अलग बनाती हैं।[1] वैसे, इस विषय पर किया गया विद्वत्तापूर्ण लेखन यह भी बताता है कि ऐसा होना हमेशा से ही ज़रूरी नहीं है। इन समूहों की मतदान-प्रवृत्ति निर्धारित करने के लिए उम्र, जातीयता, जेण्डर वग़ैरह को हमेशा ही व्यापक कसौटी की तरह ग्रहण नहीं किया जा सकता। मतदान-प्राथमिकता निर्धारित करने वाली ऐसी ही कसौटियों की श्रेणी में मतदाता की भौगोलिक स्थिति (ग्रामीण/शहरी) भी गिनी जाती है। शहरी क्षेत्र के मतदाता ज़्यादा जागरूक माने जाते हैं। उन्हें अपने राजनीतिक चयन और सक्रियता के मामले में अधिक सजग और सहभागी समझा जाता है। योगेंद्र यादव का कहना है कि सत्तर के दशक तक तो ग्रामीण मतदाताओं के मुक़ाबले शहरी मतदाता ज़्यादा सहभागी और सक्रिय हुआ ही करते थे। लेकिन 1984 के बाद ग्रामीण वोटरों का मतदान बढ़ा और 1998 तक दोनों तरह के मतदाताओं के बीच का अंतर छह प्रतिशत हो गया।

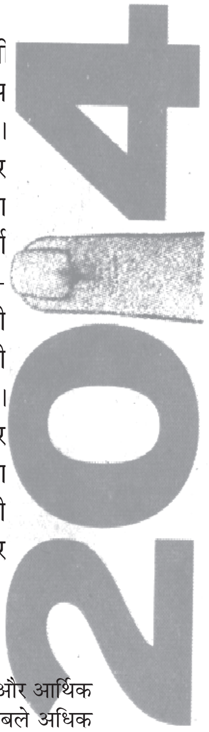

[1] नब्बे के दशक में आयी लोकतांत्रिक लहर के संबंध में योगेंद्र यादव ने दिखाया है कि किस तरह जाति, जेंडर और आर्थिक वर्ग के आधार पर सामाजिक रूप से कमज़ोर समझे जाने वाले समुदायों ने चुनाव में मज़बूत समुदायों के मुक़ाबले अधिक भागीदारी की.

शहरी मतदाता और राजनीतिक गतिविधियों में उसकी भागीदारी के बारे में आज कल परस्पर विरोधी मत व्यक्त किये जाते हैं। एक तरफ़ तो शहरी क्षेत्रों में मतदान की गिरती दर के कारण शहरी वोटर की उदासीनता की काफ़ी चर्चा है, लेकिन दूसरी तरफ़ पिछले कुछ वर्षों में शहरी जीवन के सभी क्षेत्रों से नागरिकों ने बड़े पैमाने पर जनलोकपाल बिल के लिए अन्ना हजारे आंदोलन और अन्य मुद्दों पर आम आदमी पार्टी (आप) की तरफ़ से आयोजित आंदोलनों में भागीदारी की है। यह विरोधाभास शहरी मतदाता की प्रवृत्तियों को समझने की ज़रूरत रेखांकित करता है। सवाल यह है कि क्या कोई इस तरह की अलग श्रेणी या समूह होता है जिसकी राजनीतिक प्राथमिकताओं और व्यवहार के कारण हम उसे शहरी मतदाता के तौर पर वर्गीकृत कर सकते हैं? यह लेख ग्रामीण मतदाताओं से अलग शहरी मतदाताओं के राजनीतिक व्यवहार पर रोशनी डालने की कोशिश करता है। इस अध्ययन ने विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी.एस.डी.एस.) की संस्था लोकनीति द्वारा आयोजित किये गये राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन (एनईएस) के आँकड़ों का इस्तेमाल किया है। लेख के दूसरे हिस्से में 2009 के चुनाव में शहरी और ग्रामीण मतदाताओं की मतदान-प्रवृत्ति और लोकनीति की तरफ़ से जनवरी, 2014 में किये गये ट्रैकर पोल में दिखाई गयी हाल की स्थिति को रेखांकित किया गया है। लेख का आख़िरी हिस्सा 2014 के लोकसभा चुनावों के लिए चर्चा के कुछ बिंदु प्रस्तुत करता है।

क्या शहरी मतदाता वास्तव में अलग तरह से मतदान करते हैं?

पिछले दशक के एनईएस के आँकड़े यह दर्शाते हैं कि ग्रामीण मतदाताओं के मुक़ाबले शहरी मतदाता मतदान करने के लिए कम निकलते हैं। हालाँकि वे चुनाव के अलावा भी राजनीति और राजनीतिक मसलों में रुचि रखते हैं लेकिन ग्रामीण मतदाताओं के मुक़ाबले प्रचार की गतिविधियों में उनकी भागीदारी कम ही होती है। संजय कुमार ने मतदाताओं की चुनाव-प्रचार में दिलचस्पी और चुनावों में कुल मतदान का राज्यवार विश्लेषण करके पाया है कि प्रचार और मतदान के बीच कोई सीधा संबंध स्थापित कर पाना मुश्किल है। लेकिन क्या शहरी क्षेत्र की मतदान-प्रवृत्ति ग्रामीण क्षेत्र के मुक़ाबले अलग तरह की है? तालिका-1 में मतदाताओं की तरफ़ से अपने क्षेत्र के लिहाज़ से पार्टी को दिये गये वोटों के बारे में एनईएस-2009 के आँकड़ों का राज्यवार विश्लेषण करती है। पार्टियों का वर्गीकरण संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) और राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (राजग) जैसे दो गठबंधनों में बाँट कर किया गया है।[2]

एनईएस-2009 के आँकड़ों में आंध्र प्रदेश, गुजरात, हरियाणा , मध्य प्रदेश और ओडीशा छोड़ कर बाक़ी सभी राज्यों में गाँव और शहर के बीच अंतर दिखता है। बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली और उत्तराखण्ड के शहरी मतदाताओं ने अपने ग्रामीण भाइयों के मुक़ाबले राजग को ज़्यादा समर्थन दिया। जबकि हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, केरल, महाराष्ट्र, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश के शहरी इलाक़ों में संप्रग को ज़्यादा समर्थन मिला। जिन राज्यों में क्षेत्रीय दलों और अन्य राष्ट्रीय दलों (राजग और संप्रग के अलावा) का शहरी इलाक़ों में ज़्यादा बड़ा जनाधार है— वे हैं पश्चिम बंगाल में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) का, कर्नाटक में जनता दल (सेकुलर) का, केरल में माकपा और तमिलनाडु में द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) का। यहाँ यह भी साफ़ दिखाई पड़ता है कि शहरी क्षेत्रों में लोगों ने राजग के मुक़ाबले संप्रग के लिए ज़्यादा मतदान किया।

---

[2] संप्रग कांग्रेस, नैशनल कांफ्रेंस, मुसलिम लीग, केसीएम, राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी, द्रविड़ मुनेत्र कषगम, तृण मूल कांग्रेस, झारखण्ड मुक्ति मोर्चा, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ़ इण्डिया और वीसीके का गठजोड़ था; राजग भाजपा, असम गण परिषद, जनता दल (एकीकृत), भारतीय राष्ट्रीय लोक दल, शिव सेना, एनपीएफ़, शिरोमणि अकाली दल, राष्ट्रीय लोक दल और एसडीएफ़ ने मिल कर गठित किया था.

16_ritika_Layout 1 5/1/2014 4:10 PM Page 197

अगर हम 2009 के लोकसभा चुनाव परिणाम देखें (तालिका-2) तो पाएँगे कि शहरी इलाक़ों में संप्रग के वोटों का प्रतिशत राजग के वोटों के प्रतिशत से ज़्यादा है। हालाँकि अगर हम राज्यवार आँकड़ों का अवलोकन करें तो पाएँगे कि ग्रामीण और शहरी वोटों की प्राथमिकताओं और प्रतिशत में अंतर है। हिंदी इलाक़ों के शहरी मतदाताओं में राजग ज़्यादा लोकप्रिय लगता है। हम देखते हैं कि बिहार, गुजरात, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों के मुक़ाबले शहरी क्षेत्रों में राजग के वोटों में इज़ाफ़ा हुआ है। संप्रग के शहरी वोटों की बढ़ोतरी सिर्फ़ पंजाब और शायद पश्चिम बंगाल में दिखाई पड़ती है। बाक़ी राज्यों में गाँव और शहर में एक ही क़िस्म की मतदान-प्रवृत्ति दिखाई देती है। जहाँ तक सकल औसत का मामला है तो हम पाते हैं कि संप्रग के शहरी

तालिका-1 : राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन में दर्ज भारत में राज्यवार और इलाक़ावार मतदान की प्रवृत्ति (सभी आँकड़े प्रतिशत में)

		ग्रामीण				शहरी			
	सैम्पल	संप्रग	राजग	अन्य प्रमुख दल	अन्य	संप्रग	राजग	अन्य प्रमुख दल	अन्य
आंध्र प्रदेश	2354	44	1	तेदेपा-25	30	46	2	तेदेपा-31	21
बिहार	1563	14	42	राजद-23	21	10	59	राजद-22	9
छत्तीसगढ़	468	48	44	बसपा-4	2	34	57	बसपा-3	6
दिल्ली	647	61	30	बसपा-9	0	58	34	बसपा-7	1
गुजरात	954	48	49	–	1	48	50	–	2
हरियाणा	527	54	29	बसपा-10	7	54	26	बसपा-11	9
हिमाचल प्रदेश	647	48	51	–	1	53	47	–	0
जम्मू-कश्मीर	530	45	20	जेकेपीडीपी-32	3	64	23	जेकेपीडीपी-11	2
कर्नाटक	1938	41	44	जद (सेकु)-12	3	34	40	जद (सेकु)-23	3
केरल	650	46	4	माकपा-32	18	57	1	माकपा-42	0
मध्य प्रदेश	1198	39	50	बसपा-8	3	35	51	बसपा-10	4
महाराष्ट्र	1934	47	33	शिव सेना-18	2	56	27	शिव सेना-14	3
ओडीशा	1011	39	23	बीजद-33	5	39	25	बीजद-35	1
पंजाब	941	49	45	बसपा-4	2	56	41	बसपा-2	1
राजस्थान	957	53	40	बसपा-2	5	56	44	–	0
तमिलनाडु	2312	45	1	द्रमुक-27	27	52	2	द्रमुक-33	13
उत्तर प्रदेश	2252	19	21	बसपा-30	30	24	24	बसपा-32	20
उत्तराखण्ड	628	44	37	बसपा-17	2	40	43	बसपा-5	12
पश्चिम बंगाल	1700	40	5	माकपा-33	22	38	5	माकपा-50	7
अखिल भारत	28857	41	27	बसपा-5	27	46	26	बसपा-4	24

स्रोत : राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन (एनईएस)-2009 (सैम्पल-36629)
* **सवाल :** आपने किसको वोट दिया?

16_ritika_Layout 1 5/1/2014 4:10 PM Page 198

इलाक़े के वोटों में (ग्रामीण इलाक़े के वोटों के मुक़ाबले) 6.3 प्रतिशत और राजग के वोटों में महज़ 4.2 प्रतिशत का इज़ाफ़ा है।

लोकनीति-सी.एस.डी.एस. ने चुनाव से कुछ महीने पहले देश का रुझान जानने के लिए जनवरी-2014 में ट्रैकर पोल किया। लगता है 2009 के बाद इस रुझान में बदलाव आया है (तालिका-3)। गाँव-शहर के वोटों का राज्यवार विश्लेषण बताता है कि जब मतदाताओं से पूछा गया कि अगर कल मतदान हो तो वे किसे वोट करेंगे तो राज्य के ग्रामीण इलाक़ों के मुक़ाबले शहरी इलाक़ों के बहुसंख्यक मतदाताओं का समर्थन संप्रग के लिए था। यह रुझान उत्तर भारतीय राज्यों को छोड़ कर पूरे देश में देखा जा सकता है (आंध्र प्रदेश, बिहार, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, ओडीशा, राजस्थान और तमिलनाडु)। दिल्ली, हरियाणा, झारखण्ड और पंजाब के शहरी इलाक़ों में आम आदमी पार्टी के लिए ज़्यादा समर्थन दिखाई पड़ता है।

तालिका-2 : प्रमुख राज्यों में लोकसभा-2009 के दौरान संप्रग और राजग की राज्यवार और इलाक़ावार सीटों और वोटों की हिस्सेदारी (वोटों का हिस्सा प्रतिशत में)

	ग्रामीण							शहरी						
राज्य		संप्रग		राजग		अन्य व निर्दलीय			संप्रग		राजग		अन्य व निर्दलीय	
	सीटें	जीतीं	वोट	जीतीं	वोट	जीतीं	वोट	सीटें	जीतीं	वोट	जीतीं	वोट	जीतीं	वोट
आंध्र प्रदेश	38	30	39.7	0	3.1	8	57.2	4	4	31.2	0	10.7	1	58.1
बिहार	39	2	10.2	31	37.5	6	57.2	1	1	11.1	1	57.3	0	31.6
छत्तीसगढ़	11	1	37.3	10	45.0	0	17.7	0	0	–	0	–	0	–
दिल्ली	0	0	–	0	–	0	–	7	7	57.1	0	35.2	0	7.7
गुजरात	21	11	44.3	10	44.5	0	11.2	5	5	40.2	5	54.6	0	5.2
हरियाणा	10	9	41.8	0	27.9	1	30.3	0	0	–	0	–	0	–
हि. प्रदेश	4	1	45.6	3	49.6	0	4.8	0	0	–	0	–	0	–
जम्मू-कश्मीर	6	5	43.8	0	18.6	1	37.6	0	0	–	0	–	0	–
झारखण्ड	11	3	24.6	5	27.3	3	48.1	3	0	24.5	3	33.6	0	41.9
कर्नाटक	25	6	37.4	16	41.3	3	21.3	3	0	39.8	3	44.6	0	15.5
केरल	19	15	47.8	0	6.3	4	45.9	1	0	46.0	0	7.1	0	46.9
मध्य प्रदेश	27	12	39.8	14	42.9	1	17.3	2	1	44.5	2	49.8	0	5.8
महाराष्ट्र	37	15	40.5	19	36.1	3	23.3	11	0	38.7	1	31.3	0	29.9
ओडीशा	21	6	32.8	0	16.9	15	50.3	0	10	–	0	–	0	–
पंजाब	12	7	44.6	5	44.2	0	11.1	1	0	53.1	0	39.6	0	7.3
राजस्थान	24	19	47.1	4	36.1	1	16.8	1	1	48.9	0	46.9	0	4.2
तमिलनाडु	33	23	42.5	0	2.3	10	55.1	6	1	42.7	0	2.4	2	55.0
उत्तर प्रदेश	77	20	18.0	13	20.3	44	61.7	3	4	27.0	2	34.6	0	38.3
उत्तराखण्ड	5	5	43.3	0	33.9	0	22.8	0	1	–	0	–	0	–
प. बंगाल	36	21	45.2	1	6.4	14	48.4	6	0	49.3	0	4.5	1	46.3
अखिल भारत	486	228	35.7	140	23.7	118	40.6	57	5	42.0	19	27.9	4	30.1

स्रोत : सी.एस.डी.एस. आँकड़ा एकांश

निष्कर्ष

ये आँकड़े दर्शाते हैं कि शहरी मतदाता ग्रामीण मतदाताओं से अलग प्रकार से मतदान करते हैं। लेकिन ऐसा वे स्थायी तौर पर और लगातार नहीं करते। मतदान की प्रवृत्ति और वरीयता हर राज्य और हर वक़्त में अलग-अलग होती है। इससे ज़ाहिर है कि जब चुनावी व्यवहार की बात आती है तो हम शहरी मतदाताओं को एक समरूप समूह की तरह से नहीं देख सकते। इस व्यवहार पर असर डालने वाली हाल की परिघटना आम आदमी पार्टी का उदय है। अब तक महसूस किया जाता था कि अगर पार्टी चुनाव में बढ़िया प्रदर्शन करना चाहती है तो उसे ग्रामीण मतदाताओं को गोलबंद करने और

तालिका-3 : ट्रैकर पोल-जनवरी, 2014 में दर्ज राज्यवार और इलाक़ावार मतदान के रुझान

		ग्रामीण				शहरी			
	सैम्पल	संप्रग	राजग	अन्य प्रमुख दल	अन्य	संप्रग	राजग	अन्य प्रमुख दल	अन्य
आंध्र प्रदेश	1390	21	9	वाईएसआर-32	38	33	16	वाईएसआर-8	43
बिहार	1288	12	65	जद (एकी)-19	4	16	63	जद (एकी)-13	8
छत्तीसगढ़	468	35	62	आप-3	0	33	61	आप-6	0
दिल्ली	909	14	44	आप-37	5	16	30	आप-52	2
गुजरात	804	35	60	–	5	28	64	–	8
हरियाणा	499	38	43	आप-11	8	28	33	आप-34	5
झारखण्ड	921	29	54	आप-2	15	31	47	आप-12	10
कर्नाटक	812	46	30	जद (सेकु)-19	05	53	27	जद (सेकु)-16	4
केरल	717	39	09	माकपा-29	23	50	15	माकपा-15	20
मध्य प्रदेश	920	29	65	बसपा-4	2	33	52	बसपा-13	2
महाराष्ट्र	1089	40	53	बसपा-2	5	42	43	बसपा-1	14
ओडीशा	972	31	26	बीजद-43	0	48	34	बीजद-18	0
पंजाब	620	27	55	आप-13	5	28	49	आप-22	1
राजस्थान	929	34	62	आप-3	1	38	57	आप-4	1
तमिलनाडु	763	34	23	अन्ना द्रमुक-33	10	50	14	अन्ना द्रमुक-26	10
उत्तर प्रदेश	2692	17	47	बसपा-14	22	18	41	बसपा-8	33
पश्चिम	1181	59	12	माकपा-25	4	56	14	माकपा-19	11
अखिल भारत	17422	31	41	वाम दल-4	24	31	38	वाम-2	29

स्रोत : ट्रैकर पोल-जनवरी, 2014 (सैम्पल-18591)

16_ritika_Layout 1 5/1/2014 4:10 PM Page 200

आकर्षित करने पर ज़ोर देना होगा। संख्या के लिहाज़ से यह अभी भी सही हो सकता है, लेकिन अन्ना हजारे का आंदोलन और आप ने पिछले दो सालों में दिखा दिया है कि शहरी क्षेत्र में भी मतदाताओं को गोलबंद करना और बदलाव लाना सम्भव है। दिसम्बर, 2013 का दिल्ली विधानसभा चुनाव इसका गवाह है। इस चुनाव में रिकार्ड 67 प्रतिशत मतदान हुआ जो 1993 के 62 प्रतिशत मतदान से भी ज़्यादा था। देश का जिस तरह से शहरीकरण हो रहा है और शहरी आबादी बढ़ रही है, इसी तरह की बढ़ी हुई चुनावी भागीदारी और ज़्यादा मतदान आने वाले समय में चुनाव परिणामों को बदल सकता है और उसे पुनर्परिभाषित कर सकता है।

संदर्भ

योगेंद्र यादव (2000), 'अंडरस्टेंडिग द सेकंड डेमॉक्रैटिक अपसर्ज : ट्रेंड्स ऑफ़ बहुजन पार्टिसिपेशन इन इलेक्टोरल पॉलिटिक्स इन द 1990ज़', फ्रांसाइन आर. फ्रेंकेल, ज़ोया हसन, राजीव भार्गव ऐंड बलवीर अरोड़ा (सम्पा.), *ट्रांसफ़ॉर्मिंग इण्डिया : सोशल ऐंड पॉलिटिकल डायनामिक्स ऑफ़ डेमॉक्रैसी,* ऑक्सफ़र्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली.

राजेश्वरी देशपाण्डे (2004), 'हाउ जेण्डर्ड वाज़ वुमंस पार्टिसिपेशन इन इलेक्शन 2004', *इकॉनॉमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली,* खण्ड 39, अंक 51.

संजय कुमार (2009), 'पैटर्न्स ऑफ़ पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन : ट्रेंड्स ऐंड पर्सपेक्टिव', *इकॉनॉमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली,* खण्ड 44, अंक 39.

सुहास पलशीकर और संजय कुमार (2004), 'पार्टिसिपेटरी नॉर्म्स : हाउ ब्रॉड-बेस्ड इज़ इट?', *इकॉनॉमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली,* खण्ड 39 , अंक 51.